International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue 11 || November 2017 || PP 98-102

सूरदास के काव्य में प्रकृति चित्रण

सिया राम मीणा
(व्याख्याता–हिन्दी) बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय , अलवर , (राज.) 301001

शोध सारांश

सूरदास हिन्दी के भक्तिकाल के महान कवि थे। हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिंदी साहित्य के सूर्य माने जाते हैं। सूरदास जन्म से अंधे थे या नहीं, इस संबंध में विद्वानों में मतभेद है। सूरदास श्रीनाथ की "संस्कृतवार्ता मणिपाला", श्री हरिराय कृत "भाव–प्रकाश", श्री गोकुलनाथ की "निजवार्ता" आदि ग्रंथों के आधार पर, जन्म के अन्धे माने गए हैं। लेकिन राधा–कृष्ण के रूप सौन्दर्य का सजीव चित्रण, नाना रंगों का वर्णन, सूक्ष्म पर्यवेक्षणशीलता आदि गुणों के कारण अधिकतर वर्तमान विद्वान सूर को जन्मान्ध स्वीकार नहीं करते। श्यामसुन्दर दास ने इस सम्बन्ध में लिखा है – "सूर वास्तव में जन्मांध नहीं थे, क्योंकि श्रृंगार तथा रंग–रुपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता।" डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – "सूरसागर के कुछ पदों से यह ध्वनि अवश्य निकलती है कि सूरदास अपने को जन्म का अंधा और कर्म का अभागा कहते हैं, पर सब समय इसके अक्षरार्थ को ही प्रधान नहीं मानना चाहिए।" प्रकृति और मानव का सम्बन्ध परस्पर अटूट है। मनुष्य आदि काल से ही प्रकृति के विभूतियों को अपने जीवन का आधार मानता चला आ रहा है। सूरदास ने भी अपने काव्य में प्रकृति को पर्याप्त स्थान दिया है। डा० रामरतन भटनागर का कथन हैं कि 'कृष्ण का विकास जैसे ब्रज की प्रकृति में होता है उसी प्रकार सूर साहित्य का विकास भी ब्रज–प्रकृति की छाया में होता है। ब्रज की प्रकृति ने उन्हें केवल उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं के लिए ही सामग्री नहीं दी है। उनके काव्य के केन्द्र में भी प्रतिष्ठित हुई हैं।

जीवन परिचय :–

महाकवि श्री सूरदास का जन्म 1478 ई में रुनकता क्षेत्र में हुआ। यह गाँव मथुरा–आगरा मार्ग के किनारे स्थित है। कुछ विद्वानों का मत है कि सूरदास का जन्म दिल्ली के पास सीही नामक स्थान पर एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह बहुत विद्वान थे, उनकी लोग आज भी चर्चा करते हैं। वे मथुरा के बीच गऊघाट पर आकर रहने लगे थे। सूरदास के पिता, रामदास बैरागी प्रसिद्ध गायक थे। सूरदास के जन्मांध होने के विषय में अनेक भ्रान्तिया है, प्रारंभ में सूरदास आगरा के समीप गऊघाट पर रहते थे। वहीं उनकी भेंट श्री वल्लभाचार्य से हुई और वे उनके शिष्य बन गए। वल्लभाचार्य ने उनको पुष्टिमार्ग में दीक्षित कर के कृष्णलीला के पद गाने का आदेश दिया।

श्री गुरु बल्लभ तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो।

सूरदास की आयु "सूरसारावली' के अनुसार उस समय 67 वर्ष थी। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के आधार पर उनका जन्म रुनकता अथवा रेणु का क्षेत्र (वर्तमान जिला आगरान्तर्गत) में हुआ था। मथुरा और आगरा के बीच गऊघाट पर ये निवास करते थे। बल्लभाचार्य से इनकी भेंट वहीं पर हुई थी। "भावप्रकाश' में सूर का जन्म स्थान सीही नामक ग्राम बताया गया है। वे सारस्वत ब्राह्मण थे और जन्म के अंधे थे। "आइने अकबरी' में (संवत् 1653 ईस्वी) तथा "मुतखबुत–तवारीख" के अनुसार सूरदास को अकबर के दरबारी संगीतज्ञों में माना है।सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट पारसौली ग्राम में 1583 ईस्वी में हुई ।

हिंदी काव्य :–

सूरदास जी द्वारा लिखित पाँच ग्रन्थ बताए जाते हैं:

(1) सूरसागर – जो सूरदास की प्रसिद्ध रचना है। जिसमें सवा लाख पद संग्रहित थे। किंतु अब सात–आठ हजार पद ही मिलते हैं।

(2) सूरसारावली

(3) साहित्य–लहरी – जिसमें उनके कूट पद संकलित हैं।

(4) नल–दमयन्ती

(5) ब्याहलो

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित पुस्तकों की विवरण तालिका में सूरदास के 16 ग्रंथों का उल्लेख है। इनमें सूरसागर, सूरसरावली, साहित्य लहरी, नल–दमयन्ती, ब्याहलो के अतिरिक्त दशमस्कंध टीका, नागलीला, भागवत्, गोवर्धन लीला, सूरपचीसी, सूरसागर सार, प्राणप्यारी, आदि ग्रंथ सम्मिलित हैं। इनमें प्रारम्भ के तीन ग्रंथ ही महत्त्वपूर्ण समझे जाते हैं, साहित्य लहरी की प्राप्त प्रति में बहुत प्रक्षिप्तांश जुड़े हुए हैं।

साहित्य लहरी, सूरसागर, सूर की सारावली।

श्रीकृष्ण जी की बाल–छवि पर लेखनी अनुपम चली।।

सूरसागर का मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण की लीलाओं का गान रहा है।

सूरसारावली में कवि ने जिन कृष्ण विषयक कथात्मक और सेवा परक पदों का गान किया उन्ही के सार रूप में उन्होंने सारावली की रचना की है।

सहित्यलहरी मैं सूर के दृष्टिकूट पद संकलित हैं।

सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ :–

1. सूरदास के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के अनुग्रह से मनुष्य को सद्गति मिल सकती है। अटल भक्ति कर्मभेद, जातिभेद, ज्ञान, योग से श्रेष्ठ है।

2. सूर ने वात्सल्य, श्रृंगार और शांत रसों को मुख्य रूप से अपनाया है। सूर ने अपनी कल्पना और प्रतिभा के सहारे कृष्ण के बाल्य–रूप का अति सुंदर, सरस, सजीव और मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। बालकों की चपलता, स्पर्धा, अभिलाषा, आकांक्षा का वर्णन करने में विश्व व्यापी बाल–स्वरूप का चित्रण किया है। बाल–कृष्ण की एक–एक चेष्टा के चित्रण में कवि ने कमाल की होशियारी एवं सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय दिया है–

मैया कबहिं बढैगी चौटी?

किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

सूर के कृष्ण प्रेम और माधुर्य प्रतिमूर्ति है। जिसकी अभिव्यक्ति बड़ी ही स्वाभाविक और सजीव रूप में हुई है।

3. जो कोमलकांत पदावली, भावानुकूल शब्द–चयन, सार्थक अलंकार–योजना, धारावाही प्रवाह, संगीतात्मकता एवं सजीवता सूर की भाषा में है, उसे देखकर तो यही कहना पड़ता है कि सूर ने ही सर्व प्रथम ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप दिया है।

4. सूर ने भक्ति के साथ श्रृंगार को जोड़कर उसके संयोग–वियोग पक्षों का जैसा वर्णन किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

5. सूर ने विनय के पद भी रचे हैं, जिसमें उनकी दास्य–भावना कहीं–कहीं तुलसीदास से आगे बढ़ जाती है–

हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।

समदरसी है मान तुम्हारौ, सोई पार करौ।

6. सूर ने स्थान–स्थान पर कूट पद भी लिखे हैं।

7. प्रेम के स्वच्छ और मार्जित रूप का चित्रण भारतीय साहित्य में किसी और कवि ने नहीं किया है यह सूरदास की अपनी विशेषता है। वियोग के समय राधिका का जो चित्र सूरदास ने चित्रित किया है, वह इस प्रेम के योग्य है

8. सूर ने यशोदा आदि के शील, गुण आदि का सुंदर चित्रण किया है।

9. सूर का भ्रमरगीत वियोग–श्रृंगार का ही उत्कृष्ट ग्रंथ नहीं है, उसमें सगुण और निर्गुण का भी विवेचन हुआ है। इसमें विशेषकर उद्धव–गोपी संवादों में हास्य–व्यंग्य के अच्छे छींटें भी मिलते हैं।

10. सूर काव्य में प्रकृति–सौंदर्य का सूक्ष्म और सजीव वर्णन मिलता है।

11. सूर की कविता में पुराने आख्यानों और कथनों का उल्लेख बहुत स्थानों में मिलता है।

12. सूर के गेय पदों में हृदयस्थ भावों की बड़ी सुंदर व्यजना हुई है। उनके कृष्ण–लीला संबंधी पदों में सूर के भक्त और कवि हृदय की सुंदर झाँकी मिलती है।

13. सूर का काव्य भाव–पक्ष की दृष्टि से ही महान नहीं है, कला–पक्ष की दृष्टि से भी वह उतना ही महत्वपूर्ण है। सूर की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा वाग्वैदिग्धपूर्ण है। अलंकार–योजना की दृष्टि से भी उनका कला–पक्ष सबल है।

प्रकृति–वर्णन के कारण

सूरदास के काव्य में प्रकृति–सौन्दर्य–वर्णन के मूल में कई कारण हैं। पदमसिंह शर्मा कमलेश ने सूर के प्रकृति–वर्णन के चार प्रमुख कारण बताए हैं। प्रथम, सूर के आराध्य नटनागर कृष्ण की लीला भूमि ब्रज प्रकृति की अनन्य विभूतियों का आगार है। दूसरे वह स्वयं सूर की भी क्रीड़ा स्थली है, जिसके कारण सूर को भी उसके प्रति अत्यधिक अनुराग है। तीसरे, महाप्रभु वल्लभाचार्य ने श्रीनाथ की मूर्ति की प्रतिष्ठा भी गोवर्धन में की जिसका प्राकृतिक सौन्दर्य अप्रतिम और अद्वितीय है। चौथी यह कि ब्रज और उसका केन्द्र–बिन्दु वृन्दावन केवल लौकिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, प्रत्युत उनका आध्यात्मिक महत्व भी है। इन्हीं सब कारणों से यमुना और उसके कछार, कदम्ब और करील, पर्वत और समतल मैदान, पशु–पक्षी और पेड़–पौधों आदि का वर्णन सूरदास ने बार–बार किया है–

कहाँ सुख ब्रज कौ सौ संसार।

कहाँ सुखद बंसीवट, यमुना, यह मन सदा विचार।

कहाँ वन धाम, कहाँ राधा संग, कहाँ सग ब्रज बाम।

कहाँ लता तरू–तरू प्रति झूलनि, कुंजकुंज वन धाम ।

पृष्ठभूमि रूप में प्रकृति–चित्रण

ऐसे बृज में ही सूर की आराध्य क्रीड़ा हुई है, इसलिए प्रकृति भी उनके काव्य– अंचल को पकड़े रही। भगवान कृष्ण शैशवकाल से ही बाल गोपालों के साथ प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा से मंडित कालिन्दी के तटों पर शोभित लता, तरु कुंजों में ही खेले और विहार किये हैं। राधा के हृदय में कृष्ण के प्रति जब प्रेम उगा था, तब वर्षा का ही सुहावना मौसम था । वायु झकझोर कर चल रही थी और चारों ओर बिजली चमक रही थी। यथा–

गगन गरजि धहराय जुरी घटा कारी ।

पवन झकझोर, चपला चमक चहुँओर

स्याम रंग कुंवर कर गह्यो वृषभानु बारी ।

गये वन घन और नवल नन्द किसोर,

नवल राधा नये कुंज भारी

अंग पुलकित भये मदन तिन तन,

जय सूर प्रभु स्याम स्यामा बिहारी।

उद्दीपन के रूप में प्रकृति :–

"सूर–काव्य में प्रकृति का प्रयोग प्रायः उद्दीपन रूप में अधिक हुआ है। प्रकृति का यह उद्दीपन रूप संयोग में भी परिलक्षित होता है और वियोग में भी। राधा–कृष्ण के मिलन के अवसर पर प्रकृति अपनी कामोत्तेजना की भूमिका का निर्वाह पूरी मुस्तैदी के साथ करती है–

नये कुंज अति पुंजि नये द्रुम सुभग जमुन जल पवन हिलोरी।

सूरदास प्रभु नव रस विलसत नवल राधिका जीवन भोरी ।।

शरद ऋतु की छटा के साथ प्रकृति रास की पृष्ठभूमि में और निखर उठती है। उस समय वृन्दावन सुमन–समूहों से खिल है उठता है, वृक्ष फलों से लद जाते हैं, सुरभिपूर्ण पवन सर्वत्र आनन्द ही आनन्द बिखेर देता है। यथा–

सरद–निसि देखि हरि हरप पायौ।

विपिन वृन्दा रमन, सुभग फूले सुमन, रास रुचि स्याम के मनहि आयौ ।

परम उज्ज्वल रैनि छिटकि रहीं भूमि पर, सद्य फल तरुनि प्रति लटकि लागै।

तैसोई परम रमनीक जमुन– पुलिन, त्रिविध बहै पवन आनन्द जागे ।।

बसन्त ऋतु की अपनी सुषमा ही और है। राधिका छड़ी लेकर कृष्ण के ऊपर दौड़ती है, शीतल जल वाली यमुना मंद गति से बहती है, विरहिणी के विरह को जागृत करने वाली कोकिल बोल रही है। लाल–लाल टेसू फूले हुए हैं और वृक्ष लताओं पर मंडरा रहे हैं।

प्रकृति का यह उद्दीपन रूप संयोग के क्षणों में ही नहीं दिखाई देता है, वरन् वियोग के क्षणों को भी उद्दीप्त करता है। अन्तर इतना है कि संयोग के क्षणों में प्रकृति जहाँ सुखदायी प्रतीत होती है; वियोग की स्थिति में वही दुःख देने वाली बन जाती है। वर्षा, बसन्त, चन्द्रमा, वायु, यमुना आदि सब विरहिणी की विरह व्यथा को तीव्र करने में सहायक सिद्ध होते हैं। यमुना के तट पर निरन्तर केलि में निमग्न रहने वाली गोपिकाओं को वियोग की दशा में अब वही कालिन्दी काली प्रतीत होती है। यथा–

- ★ देखियत कालिन्दी अतिकारी ।
- ★ अहो पथिक कहियौ उन हरि सौं भई विरह जुर कारी ।
- ★ मनु पर्यक ते परी धनि धसि, तरंग तलफ तन भारी ।
- ★ दिगलित कत्र कुस कांस फूल पर पंकजु कज्जल सारी ।
- ★ भरे भ्रमत अति फिरति भ्रमति, मति, दिसि–दिसि दीन दुखारी ।।
- ★ निसिदिन चकई काज बकति है, भई मनो अनुहारी ।
- ★ सुरदास प्रभू जोइ जमुन गति, सो गति भई हमारी ।

सहानुभूति प्रदर्शक रूप में प्रकृति

सूर ने कहीं–कहीं प्रकृति का चित्रण सहानुभूति प्रदर्शन में भी किया है। परन्तु ऐसे स्थानों पर प्रकृति अलंकरण रूप में प्रयुक्त हुई है। यथा–

उपमा नैन न एक गही।

कहि चकोर विधु–मुख बिनु जीवत, भ्रमर नहिं उड़ि जात।

हरिमुख कमल कोष बिछुरै तैं ठाले कत ठहरात ।।

वैराग्य दृ भावना की अभिव्यक्ति रूप में प्रकृति

सूरदास ने कहीं–कहीं अपने आराध्य के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त करने के लिए बार–बार चकोर, चन्द्रमा, मीन, जल, भ्रमर, कमल आदि का दृष्टान्त दिया है। उनके वैराग्य के पदों में प्रकृति का रहस्यमय रूप भी झलकता है। देखिए–

- ★ चकई री, चलि चरन सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग ।
- ★ जहाँ भ्रम निसा होत नहिं कबहूँ, सोइ सायर सुख–जोग ।
- ★ जहाँ सनक सिव हँस, मीन सुनि, नख रवि प्रभा प्रकाश ।
- ★ प्रफुलित कमल, निमिष नहिं ससि डर, गुंजत निगम सुवास ।
- ★ प्रकृति का स्वतन्त्र चित्रण
- ★ सूर काव्य में प्रकृति–सौन्दर्य के स्वतन्त्र चित्र भी अपने कोमल तथा कठोर दोनों रूपों में मिल जाते हैं उदाहरण स्वरूप देखिए–
- ★ जागिये व्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले।
- ★ कुमुद वृन्द सकुचित भये, भृङ्ग लता भूले।
- ★ इसी प्रकार प्रकृति का कठोर रूप निम्न पद में लक्षित होता है–
- ★ भहरात, झहरात दावानल आयौ ।
- ★ घेरि चहुँ ओर, करि सोर अंदोर बन, धरनि अकास चहुँ पास छायौ ।

निष्कर्ष :–

अंततः कहा जा सकता है कि सूर के काव्य में प्रकृति–सौन्दर्य के कुछ मधुर चित्र उभरे हैं। उनका प्रकृति–सौन्दर्य बज तथा मथुरा के प्राम्य–जीवन की नाना छवियों को अंकित करने में सफल रहा है। प्रकृति–चित्रण की दृष्टि से उनका काव्य भक्ति कालीन कवियों में सर्वाधिक व्यापक और मौलिकतापूर्ण है।सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार–शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे–पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सूरदास हिंदी साहित्य के महाकवि हैं, क्योंकि उन्होंने न केवल भाव और भाषा की दृष्टि से साहित्य को सुसज्जित किया, वरन् कृष्ण–काव्य की विशिष्ट परंपरा को भी जन्म दिया।

सन्दर्भ सूची :–

1. आचार्य रामचंद्र, शुक्ल (1921). हिन्दी साहित्य का इतिहास. काशीः नागरी प्रचारिणी सभा. पृ॰ १५६.

2. चन्द्रकान्ता. "नतकें (नत श्रंल ींदांत च्वेंक) , बेंदकतांदजीं". बींदकतांदजीं.बवउ. ,19 अक्तूबर 2015

3. "क्या रामदास बैरागी थे कृष्ण भक्त सूरदास जी के पिता , 2016

4. "सूरदास भगवान कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे।". 2017